Title: Need to release funds for enabling payments to workers of closed textile mills under the Central Government sponsored TWRF Scheme.

श्री हरिन पाठक (अहमदाबाद) : अध्यक्ष जी, कपड़ा उद्योग से जुड़े हुए लाखों कामगारों के आर्थिक संकट की ओर मैं एक बार फिर सरकार का ध्यान आकृट करना चाहता हूं। यह गंभीर सम्स्या है। â€¦ (व्यवधान)

MR. SPEAKER: धीरज रखिये, I am prepared to sit till 2 o'clock, or till 3 o'clock.

श्री हरिन पाठक : सन् 1985 की कपड़ा उद्योग नीति के दूरगामी असर से देश में एक के बाद एक मिलें बंद होने लगीं हैं लाखों कामगार बेकार और बेरोजगार होने लगे हैं। उस सम्य की सरकार ने एक अच्छा निर्ण्य कि्या। तत्कालीन सरकार ने एक "टैक्सटाइल वर्क्र्स रिहैबिलिटे्शन फंड स्कीम" नाम की योजना बनाई, जि्सके तहत जो कामगार हैं, उन्हें कुछ धनराशि मुहैया कराई जाए। वह राशि देने का काम शुरू हो गया है और राशि दी जा रही है। मिलें निरंतर बंद होती जा रही हैं और जो 41 आइडेंटिफाईड मिलें हैं, उनमें से 31 गुजरात में और 27 अहमदाबाद में हैं। अभी भी 25 हजार कामगारों को "टैक्सटाइल वर्क्र्स रिहैबिलिटे्शन फंड स्कीम" से पैसा नहीं मिला है। माननी्य अटल बिहारी वाजपेयी जी के नेतृत्व में, एनडीए की सरकार ने जब माननी्य कांशी राम राणा जी टैक्सटाइल मंत्री थे, इन कामगारों की एक सीलिंग बनाई गयी थी कि मिल बंद होने के सम्य, जिनकी तनख्वाह 2500 रुप्या थी, उस मर्यादा को बढ़ाकर 3500 रुप्या करने का वि्चार कि्या गया ताकि स्कीम का लाभ उन्हें मिल सके। वह कैबिनेट द्वारा पास कि्या हुआ निर्ण्य है। मैं आपके माध्यम से सरकार से अनुरोध करुंगा कि यह जो निर्ण्य लि्या है कि जिनकी तनख्वाह जब मिल बंद थी तब 3500 रुप्या थी, उस कामगार को भी इस योजना के अंतर्गत लि्या जाए और सन् 1986 से ही कामगार को पैसा दि्या जाए। साथ-साथ जो स्टेच्युटरी राइट्स के लाभ हैं, ग्रेच्युटी और डि्स्प्लेसमेंट बैनिफिट्स अभी तक देश में एक भी कामगार को नहीं मिले हैं। मैं सरकार से अनुरोध करना चाहता हूं कि उनकी मर्यादा 2500 रुप्ये के बदले 3500 रुप्ये की जाए और उनके जो स्टेच्युटरी राइट्स के बैनिफिट्स हैं, उन्हें वे दि्ये जाएं।